

## भारत और यूरोप की संस्कृति



हमारे देश में नौजवान विदेश जाने के लिए बहुत लालायित रहते हैं। उनका एक ही सपना होता है कि बस किसी तरह यूरोप या अमरीका जाकर बस जाएँ। यूरोप और अमरीका की एम्बसी केवल 5% आवेदन ही भारतीयों से स्वीकार करती है क्योंकि उनके यहाँ अपने देश में घुसने के लिए ढेर सारी पाबंदियाँ हैं। साक्षात्कार के समय ऐसे प्रश्न किए जाते हैं जैसे आपकी कोई अपराधिक पृष्ठभूमि हो लेकिन फिर भी हम लोग बाहर जाने के लिए आतुर रहते हैं। प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रद्धेय भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक: [https://docs.google.com/file/d/0B8n\\_36gK-KF4WnhfdUwyeGJzNIU/edit?usp=sharing](https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4WnhfdUwyeGJzNIU/edit?usp=sharing)

एक बहुत मशहूर प्रोफेसर रहे हैं यूरोप में जिनका नाम है प्रोफेसर धर्मपाल जी जिनका जीवन यूरोप में 40 वर्ष पढ़ाने में बीता। भाई राजीव जी के वे परिचित

थे। एक दिन भाई राजीव जी ने उनसे पूछा कि हमारे देश के युवा बाहर जाने को इतने लालायित क्यों रहते हैं और ऐसा क्या है विदेशों में जो हमारे यहाँ नहीं है? प्रोफेसर जी ने उत्तर दिया कि जब कोई जाति किसी दूसरी जाति को ठीक तरह से नहीं जानती होती तो वह या तो उससे आतंकित रहती है या प्रभावित रहती है। भारत के सन्दर्भ में, यहाँ की जाति पश्चिम से बुरी तरह प्रभावित है इसीलिए हर कोई चाहता है कि वह बाहर जा कर बस जाए लेकिन मूल में सच्चाई कुछ और ही होती है! इस पर भाई राजीव जी ने बाद में कई दस्तावेजों को लेकर अध्ययन किया और कुछ बातें उनकी समझ में आयीं। उन्होंने यूरोप के दार्शनिकों का अध्ययन किया और पता लगाया कि उनके दर्शन का यूरोप की सभ्यता पर क्या प्रभाव पड़ा। जब इन तथ्यों का विश्लेषण किया गया तो पता चला कि ये तथ्य किसी भी भारतीय को बुरी तरह चौंका देने की क्षमता रखते हैं!

संसार में जितनी भी सभ्यताएं हैं उन सब के पीछे प्रेरणा होती है किसी न किसी दर्शन (philosophy) की। जैसे भारतीय दर्शन का केन्द्र है धर्म! इसी दर्शन के ऊपर पूरी जाति या समाज की नींव डलती है। इसी तरह जैसी सभ्यता होती है, अर्थव्यवस्था भी उसी के अनुसार होनी चाहिए तभी देश में शांति बनी रहती है। परिवार एक समाज की सबसे छोटी इकाई होता है। किसी भी समाज में परिवार व्यवस्था, उस समाज का चरित्र दिखाती है। यूरोपीय समाज की नींव एक दार्शनिक की विचार धारा पर टिकी है जिसका नाम है 'प्लेटो'। इस प्लेटो के बारे में लिखा गया है कि, "The whole European civilization is a footnote of Plato's philosophy."। इस व्यक्ति ने कई पुस्तकें लिखीं जिनमें से 'The Republic' और 'Laws' प्रमुख हैं। इन्हीं के शिष्य हुए अरस्तु (Aristotle) और सबसे अंत में रूसो। आप कह सकते हैं कि इन दार्शनिकों ने यूरोप के जंगली जीवन को एक समाज के रूप में ढालने की कोशिश की जिसके लिए उन्होंने कुछ कानून निर्धारित किए। आज का जो भी यूरोपीय समाज आप देख रहे हैं वो इन्हीं दार्शनिकों का मूर्त स्वरूप है।

समाज की मूल इकाई यानी परिवार, स्त्री और पुरुष दोनों के बिना असंभव है। भारतीय समाज में स्त्री और पुरुष का विधि विधान से विवाह संपन्न करने की परंपरा रही है और उनसे परस्पर प्रेम और विश्वास की अपेक्षा रखी जाती है। प्रेम और विश्वास दोनों मानवीय मूल्य हैं जिनके पालन से व्यक्ति अपने धर्म को ठीक तरह से निभाता है क्योंकि धर्म ही भारतीय समाज व्यवस्था का केन्द्र है। प्लेटो का दर्शन कहता है कि “जीवन का अंतिम ध्येय शारीरिक सुख को प्राप्त करना है और इस सुख को प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधा है संतान!”। इसीलिए यूरोप में या तो बच्चे की भ्रूण हत्या कर दी जाती थी, या उसे टोकरी में डाल कर कहीं मरने के लिए छोड़ दिया जाता था और अगर नहीं मरता था तो उसे कोई चर्च के पायदान पर रख जाता था। ऐसा करना वहाँ कानूनी प्रावधान था पिछले 2500 वर्षों में! यही कारण है कि वहाँ जनसंख्या का घनत्व इतना कम है क्योंकि वहाँ स्त्री और पुरुष रहते तो एक साथ हैं परंतु केवल शारीरिक क्षुधा को शांत करने के लिए न कि जाति को गति देने के लिए। आज भी यूरोप और अमरीका के समाज में 70% लोग बिना विवाह किए रहते हैं। इसी को वहाँ ‘Live-in relationship’ कहा जाता है जिसका आज कल भारत में अंधानुकरण हो रहा है बिना इसका इतिहास जाने!

आज के अमरीका को यदि आप यूरोप ही मानें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि आज से लगभग 700 वर्ष पहले मूल अमरीकी निवासियों को स्पेन के एक लुटेरे ‘कोलंबस’ ने मौत के घाट उतार दिया था! आज के अमरीका में उनकी आबादी 50000 से भी कम है और उनमें से अधिकांश मिश्रित जातियों के हैं। आज जो आप अमरीका देख रहे हैं वो यूरोप का ही विस्तार है। प्लेटो ने इस बात को कई जगह लिखा है कि किसी भी स्त्री को बच्चा रखने का अधिकार नहीं है। ये अधिकार पिता को ही होगा कि वह बच्चे को जिन्दा रखे, फेंक दे या मार दे क्योंकि उनके हिसाब से स्त्रियों में आत्मा नहीं होती! प्लेटो ने यह भी लिखा है कि स्त्री एक मेज़ या कुर्सी की तरह होती है जिसका काम है पुरुषों को आराम पहुँचाना और जब जी चाहे उन्हें फेंक कर आप दूसरी ले आयें! यूरोप के एक और दार्शनिक रूसो ने तो यहाँ तक लिखा है कि उसके कुल 5 बच्चे हुए जिनमें से 4 को उसने फेंक दिया और एक को रख लिया जो उसके

साथ ही रहता था। जो चार बच्चे उसने फेंके थे, उनमें से दो को कुत्तों ने खा लिया और दो चर्च में पल रहे थे! इस बात को लिखने के बाद वो आगे लिखता है कि यही कानून है और यही आदर्श हर यूरोपीय को अपनाना चाहिए!

1950 तक स्त्रियों की स्थिति यह थी कि वे अपना बैंक खाता नहीं खुलवा सकती थीं और वोट नहीं डाल सकती थीं। वहीं बच्चे जो चर्च में पलते थे, उनकी बड़ी ही विचित्र कहानी होती थी। इन बच्चों को पढ़ाने के लिए चर्च में प्रबंध होता था जिसको कॉन्वेंट स्कूल कहा जाता था। इनको पढ़ाने वाले अध्यापक को फादर कहा जाता है यदि उस व्यक्ति की उम्र 50 से अधिक हो। ब्रदर कहा जाता है अगर व्यक्ति की उम्र 50 से कम हो। इसी तरह पढ़ाने वाली अध्यापक स्त्री है तो उसे मदर कहते थे और यदि उसकी उम्र 50 से कम है तो सिस्टर! इन बच्चों के माँ बाप का पता नहीं होता था। यही प्रणाली मैकाले भारत में लेकर आया और उसने सबसे पहला कॉन्वेंट स्कूल खोला कलकत्ता में। उसके बाद आज के भारत में हर गली नुक्कड़ पर आपको एक कॉन्वेंट दिख ही जाएगा। हमारे यहाँ लोग अपने बच्चों को कॉन्वेंट में पढ़ाने में बड़ी शान समझते हैं और उनके बच्चे स्कूल जाकर किसी अन्य को फादर और मदर बोलते हैं! अंग्रेजों के यहाँ एक गाली होती है जिसे 'Bastard' कहते हैं। इसे पूरे यूरोप अमरीका में बहुत बुरा माना जाता है क्योंकि इसका मतलब होता है वो व्यक्ति जिसके दो बाप होते हैं! हमारे देश में कॉन्वेंट में पढ़ने वाले बच्चों को क्या बोला जाए?

यूरोप के समाज में एक पुरुष को अनेक स्त्रियों के साथ संबंध बनाने की पूरी आज़ादी होती है। इन सभी स्त्रियों में से वह चाहे तो किसी एक स्त्री को अपने साथ रख सकता है जिसको वह मुख्य स्त्री कहता है। अन्य स्त्रियाँ Kept या रखैल कही जाती हैं। इन स्त्रियों को 'Madam' कहा जाता है और "Mrs." कहकर संबोधित किया जाता है जैसे Mrs. Clinton, Mrs. Johnson आदि। मुख्य स्त्री को Mrs. कहकर नहीं बुलाया जाता! 5वीं शताब्दी में एक संत हुए रोम में जिनका नाम था Valentine। इन्होंने भारत के दर्शन को पढ़ा था और वे पूरे रोम में विवाह करने का प्रचार करते थे और एक स्त्री से विवाह करने के

लाभ बताते थे। धीरे धीरे कई लोग उनसे प्रभावित हुए और उन्होंने एक पत्नी से शादी की। यह बात वहाँ के राजा Claudius को बहुत बुरी लगी और उसने कहा कि Valentine पारंपरिक यूरोपीय दर्शन को चुनौती दे रहे हैं। इसके लिए उसने Valentine के लिए फांसी का आदेश दे दिया। 14 फरवरी 498 ई. को Valentine को फांसी दे दी गई। इसी दिन उनकी याद में Valentine Day मनाया जाता है परंतु अबूझ भारतवासी इसे मस्ती करने का दिवस समझते हैं और यह नहीं जानते कि वे जिस दिशा में जा रहे हैं, Valentine को उसकी ठीक विपरीत दिशा में जाने के लिए मौत की सजा दी गई थी!

पाश्चात्य दर्शन कहता है कि प्रकृति पुरुष के उपभोग के लिए है इसीलिए वहाँ हर फैसला लेने का हक केवल पुरुष के पास है। चाहे वो प्रकृति का संरक्षण करे या विनाश करे, सब पुरुष की मर्जी के अनुसार ही होगा! यही कारण है कि वहाँ जो भी आविष्कार हुए हैं, वे प्रकृति को संरक्षित नहीं करते! उदाहरण के लिए बिजली का निर्माण। बिजली का निर्माण होगा तो सुविधाएँ बढ़ेंगी और सुविधाएँ बढ़ेंगी तो प्रसन्नता बढ़ेगी। इस बिजली के लिए आपको पानी चाहिए। पानी के लिए आप बाँध बनायेंगे। बांधों के लिए आप पहाड़ काटेंगे। इसके साथ साथ आप टनल बनायेंगे। अगर यह सब भी नहीं हो सका तो आप कोयला खोदेंगे। इन दोनों कृत्यों का ही नतीजा है उत्तराखंड की महाआपदा! कोयला खोदने से जमीन खोखली हो जाती है जिससे vacuum पैदा होता है। इस vacuum की वजह से जमीन अंदर से खिसकती है और भूकंप आते हैं। यही हाल था refrigeration और air condition का जिसने वायुमंडल में ओज़ोन की परत में छेद करके पृथ्वी पर जीवन पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। सिद्धांत भारत को भी पता थे लेकिन हमने इसका इस्तेमाल कभी प्रकृति को अधीन करने के लिए नहीं किया क्योंकि हमारा दर्शन कहता है कि यह सृष्टि ईश्वर की बनाई हुई है जिस पर सभी का अधिकार है! मनुष्य चाहे तो इसका सदुपयोग करे लेकिन दुरुपयोग करने का अधिकार मनुष्य को नहीं है!

पश्चिम ने grinder बनाया चटनी बनाने के लिए। बहुत तेज़ है, जल्दी बना देता है चटनी। भारत ने सिल बड़ा दिया चटनी बनाने के लिए। धीरे है, समय लगता

है लेकिन चटनी अच्छी पीस देता है। क्या आपको पता है सिल बट्टे पर चटनी पीसने से माताओं बहनों के गर्भाशय का व्यायाम होता है जिससे उन्हें शिशु जनने में सहजता होती है? यही नहीं जो पुरुष सिल बट्टे का इस्तेमाल करते हैं उनके हृदय का व्यायाम होता है। ये सब बातें आज हमें इसीलिए पता चलीं क्योंकि पाश्चात्य तकनीक के दुष्प्रभावों से जो बीमारियाँ फैल रही हैं, उनकी वजह से भारतीय परंपरा पर शोध हो रही हैं! लेकिन इतना समय है किसके पास? या तो हम बहुत व्यस्त हैं नहीं तो समय बचा कर हमने टीवी देखना है! फिर भी हम भारतीयों को लगता है कि स्कूल में बताया था कि भारतीय परंपरा किसी काम की नहीं, चाहे मर जाएँ लेकिन अंग्रेजियत नहीं छोड़ेंगे!

कोई भी देश तब तक जीवित रहता है जब तक उसकी संस्कृति जीवित रहती है। जब यह संस्कृति खत्म हो जाती है, देश भी अपने आप खत्म हो जाता है। इसी की रक्षा के लिए भारत में समय समय पर महापुरुष हुए जिन्होंने भारत और भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए कई कार्य किए जिनमें प्रमुख थे - स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, विनायक दामोदर सावरकर आदि। किसी भी देश की संस्कृति उस देश की जलवायु के अनुसार होती है। जैसे भारत की शीतोष्ण जलवायु है और यूरोप की शीतल। उनके यहाँ ले-दे के गेहूँ होता है जिसे वो अधिक ठण्ड होने के कारण गूंद नहीं पाते इसीलिए उनके यहाँ बन, ब्रेड होते हैं। इन्हें पचाने के लिए उन्हें ऊपर से कीटनाशक पीना पड़ता है जिसे भारतीय कोल्ड ड्रिंक कहते हैं! उनके यहाँ इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है और यह उनकी मजबूरी है। अब ये खानपान भारत में आ गया तो यहाँ के लोगों में बीमारियों का अम्बार लग गया जो कि स्वाभाविक है क्योंकि हमारी जलवायु उनसे भिन्न है। हम लोग पश्चिम का अनुसरण तो अन्धों की तरह कर लेते हैं परंतु यह हमेशा भूल जाते हैं कि दुष्परिणाम भी हम ही को भुगतने पड़ेंगे क्योंकि हम अपनी प्रकृति को चुनौती दे रहे हैं! यही बात हमारे पहनावे और सोच पर भी लागू होती है।

अब हमारे सामने दो विकल्प हैं - या तो जो पश्चिमीकरण की आंधी उड़ रही है उसमें बिना सोचे समझे बह चलें और कहीं गड्ढे में गिरकर अपने देश के

अस्तित्व को नष्ट कर लें या फिर अपनी प्रकृति को समझें और आज से ही भारतीयता को ग्रहण करें और अपने देश और समाज को उन ऊंचाइयों पर लेकर जाएँ जहाँ इसे होना चाहिए! करने वाले भी हम ही हैं क्योंकि हमारी आने वाली पीढ़ी हमसे यही सवाल करेगी। कहीं ऐसा न हो कि हमारी नींद का भुगतान हमारी पीढ़ी को गुलामी के रूप में करना पड़े!

“आप के पूर्वजों ने जो किया वो आपके सामने है। आप जो आज फैसला करोगे, वो आपकी पीढ़ी को प्रभावित करेगा!”

- श्रद्धेय भाई राजीव दीक्षित जी

जय भारत!